बी. ए खण्ड-तृतीय / हिन्दी (प्र०) अध्ययन सामग्री

डॉ० संतोष कुमार, सहायक प्राचार्य, हिन्दी विभाग,
भारती मंडन महाविद्यालय, रहिका, मधुबनी

दिनांक - 03.07.2021

पत्र: अष्टम / साहित्य सिद्धांत एवं हिन्दी आलोचना

रस

साहित्य में रस का बड़ा ही महत्व माना गया है। साहित्य दर्पण के रचयिता ने कहा है —

"रसात्मकं वाक्यं काव्यम्" अर्थात्, रस ही काव्य की आत्मा है। रस का आनंद अलौकिक और अकथनीय होता है। जिस प्रकार अच्छे भोजन करने से जीभ और मन को तृप्ति मिलती है, ठीक उसी प्रकार मधुर काव्य ~~से भी~~ के रसास्वादन से हृदय को आनंद प्राप्त होता है।

'रस्यते आस्वाद्यते इति रसः।"

अर्थात्, जिसका आस्वादन किया जाए वही 'रस' है। या,

'सरति इति रसः'

अर्थात् जो सरणशील है, द्रवणशील हो, प्रवहमान हो, वह 'रस' है।

इस प्रकार देखा जाए तो साहित्य रस के बिना निरानंद है। यही रस साहित्यानंद को ब्रह्मानंद-सहोदर बनाता है।

जिस प्रकार परमात्मा का यथार्थ बोध कराने के लिए उसे रस-स्वरूप 'रसो वै सः' कहा गया है। ठीक उसी प्रकार परोक्षतः साहित्य को यदि रस-स्वरूप मानकर 'रसो वै सः' कहा जाए, तो अत्युक्ति न होगी।

~~विभिन्न~~ इस प्रकार विभिन्न आचार्यों ने अपने-अपने ढंग से 'रस' को परिभाषित किया है।

'नाट्य शास्त्र' के प्रणेता भरत मुनि ने रस ~~की परि~~ को इस प्रकार परिभाषित किया है :——

"विभावानुभाव व्यभिचारि संयोगाद्रस निष्पति : ।"

अर्थात् विभाव, अनुभाव और व्यभिचारी भाव के संयोग से रस की निष्पत्ति होती है।

किन्तु, सर्वप्रथम 'स्थायी भाव' का ज्ञान आवश्यक है जो विभाव, अनुभाव तथा व्यभिचारी भाव के संयोग से रस-दशा को प्राप्त होता है।

इस प्रकार 'रस' के ~~तीन~~ चार अवयव माने जाते हैं——

1) स्थायीभाव
2) विभाव
3) अनुभाव
4) संचारी भाव व व्यभिचारी भाव

(क्रमश : . . .)